International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

पातंजल योग में ईश्वर का स्वरूप

श्रीकृष्ण
शोधार्थी
महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक
Email : skrishan900@gmail.com

शोध–आलेख–सार :

हमारे साहित्य एवं समाज में ईश्वर का बड़ा ही उच्च स्थान माना गया है, परन्तु उसकी सत्ता को सन्देहजनक भी माना है। संस्कृत साहित्य में ईश्वर को सर्वज्ञ, अजर–अमर एवं शाश्वत माना गया है। उसके एकत्व को लेकर भी प्रश्न खड़े होते हैं। उसे कहीं ओंकार के रूप में तो कहीं सर्वशक्तिमान के रूप में जाना गया है। महर्षि पतंजलि कृत योग सूत्र में उसका जो स्वरूप माना गया है।

मूल शब्द :

ईश्वर, पुरूष विशेष, श्रुति, एकत्व, सर्वज्ञः, प्रणव (ओंकार), समाधि।

भूमिका :

सूत्रकार महर्षि पातंजलि ने ईश्वर को पुरूष विशेष कहा है जो क्लेश, कर्म, विपाक, आशय और अपरामृष्ट इन पाँचों से सदा रहित होता है।[1] जो दुख देते है वे क्लेश कहे जाते हैं।[2] योगदर्शन में इन क्लेशों को पाँच प्रकार का माना गया है। जो अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष, अभिनिवेश नाम से कहे गये हैं।[3] शुभरूप एवं अशुभरूप कृत्तियों से उत्पन्न होने के कारण पुण्य तथा पाप कर्म कहे जाते हैं।[4] वृत्तिकार भोजदेव ने कर्मों के विषय में बताते हुए कहा है कि जिनका विधान वेद के द्वारा किया गया है ऐसे पुण्य रूप वाले कर्म, जिनका निषेध किया गया है ऐसे पाप रूप वाले कर्म और पुण्य–पाप रूप से मिले हुए कर्म कहे जाते हैं।[5] कर्मों के परिणाम को विपाक (फल) कहा जाता है।[6] वृत्तिकार के मतानुसार जो पकते हैं (फल प्रदान

करते हैं) वे विपाक कहे जाते हैं। इन कर्मों का फल जाति, आयु और भोग है।[7] सुख–दुख भोग से उत्पन्न वासना आशय कहलाती है।[8] कर्मों का जो संस्कार अंतःकरण में विद्यमान रहता है, जिससे पुनः वासना उत्पन्न होती है। इसी वासना के मूल कारण का नाम आशय (संस्कार) है। वृत्तिकार के मतानुसार जो संस्कार चित्त भूमि में फल प्रदान करने तक विद्यमान रहते हैं उन्हें आशय कहा जाता है।[9]

इस प्रकार जो क्लेश, कर्म, विपाक, आशय और अपरामृष्ट इन पाँचों से रहित है वही पुरूष विशेष ईश्वर कहा जाता है।

ईश्वर को पुरूष विशेष इस कारण से कहा गया है कि मनुष्यों में आध्यात्मिक, आधिभौतिक एवं आधिदैविक ये तीन प्रकार के दुख होते हैं। प्रारब्ध, संचित, क्रियामाण कर्म और वासनाएं होती है। इनको नष्ट करने के बाद ही वे कैवल्य को प्राप्त होते है। ईश्वर का इन तीनों प्रकार के बन्धनों से संबंध न तो भूतकाल में था, न कभी भविष्यकाल में होगा और न ही अब है।[10] इसी कारण से उसे पुरूष विशेष कहा गया है।

वृत्तिकार भोज देव ने पुरूष विशेष के बारे में कहा है कि जिसमें अन्य पुरूषों से विशेषता मानी जाए वह विशेष कहलाता है।[11]

ईश्वर के उत्कर्ष में शास्त्र प्रमाण :

योग दर्शन में ईश्वर को सम्पूर्ण ऐश्वर्य से युक्त माना गया है। ईश्वर के उत्कर्ष में श्रुति–स्मृति एवं पुराणादि प्रमाण है।[12] श्रुति–स्मृति के विषय में शंका उत्पन्न होती है कि इनके विषय में कौन–सा प्रमाण है। इस शंका को दूर करने के लिए भाष्यकार ने कहा है कि ज्ञानस्वरूप सर्वश्रेष्ठ ईश्वर ही शास्त्र का निमित कारण है। ईश्वर और शास्त्र में अनादि काल का संबंध स्वीकार किया गया है।[13]

वृत्तिकार भोजदेव ने ईश्वर की उत्कृष्टता के विषय में बतलाते हुए कहा है कि सत्वगुण की प्रबलता के कारण उस ईश्वर का ऐश्वर्य अनादि काल से है। उस ईश्वर के सत्व की उत्कृष्टता अनन्त ज्ञानादि से है।[14] वृत्तिकार के कहने का भाव भी यही है कि ईश्वर सदा ही

ज्ञान एवं ऐश्वर्य से युक्त रहता है। इसी कारण से भाष्यकार ने ईश्वर को सदैव ऐश्वर्यवान और सदैव मुक्त कहा है।[15]

ईश्वर का एकत्व :

योगदर्शन में एक ही ईश्वर को स्वीकार किया गया है। ईश्वर के एकत्व के विषय में भाष्यकार और वृत्तिकार दोनों का एक ही मत है। भाष्यकार ने कहा है कि यदि दूसरे के ऐश्वर्य को ईश्वर के समान माना जाएगा तो दोनों में एक समान ऐश्वर्य के को ईश्वर के समान माना जाएगा तो दोनों में एक समान ऐश्वर्य होने से एक ही वस्तु के विषय में यह नवीन हो, यह पुरानी हो, इस तरह की अलग–अलग कामना होने पर एक ही इच्छा के पूरी होने से दूसरे की इच्छा का विघात होगा।[16] अतः जिसका ऐश्वर्य समानता ओर अधिकता से रहित है वही ईश्वर कहा गया है। वृत्तिकार ने भी कहा है कि ईश्वर अनेक नहीं हैं। उनका कहना है कि यदि एक से अधिक ईश्वर माने जाये और उनके ऐश्वर्य भी समान ही हो, लेकिन उनके अभिप्राय भिन्न–भिन्न हो तो कार्य की सिद्धि नहीं हो सकती।[17] इस प्रकार उत्कर्ष एवं अपकर्ष मानने पर जो उत्कर्ष है वही ईश्वर है। दूसरों के ऐश्वर्य की सीमा प्राप्त होने से उसमें असीम ऐश्वर्य प्राप्त होता है।[18]

ईश्वर की सर्वज्ञता :

सूत्रकार महर्षि पतंजलि ने ईश्वर को सम्पूर्ण ज्ञान का बीज कहा है।[19] भाष्यकार व्यास ने ईश्वर की सर्वज्ञता के विषय में कहा है कि यह ज्ञान बढ़ते–बढ़ते जिसमें अतिशय रूप से रहित है वही सर्वज्ञ है। इसी कारण से वह सर्वज्ञता का बीज कहा गया है।[20]

वृत्तिकार भोजदेव के मतानुसार ईश्वर अतीत अनागत एवं वर्तमान का ज्ञाता होने के कारण सर्वज्ञ कहलाता है। संसार के सभी ज्ञान सीमा में बंधे हुए हैं। लेकिन ईश्वर में सभी सीमाओं का अतिक्रमण कर ज्ञान निरतिशय रूप से समा जाता है। इसी कारण से न्यूनता और अधिकता का मूल होने से वही ईश्वर सर्वज्ञता का बीज कहा गया है।[21]

सर्वज्ञता के कारण ईश्वर काल के द्वारा बाधित नहीं होता। इसी कारण से सूत्रधार ने ईश्वर को सृष्टि के आरम्भ में उत्पन्न गुरूओं का भी गुरू कहा है।[22]

ईश्वर का वाचक शब्द प्रणव :

ईश्वर का वाचक अर्थात् कथन करने वाला शब्द ''प्रणव'' स्वीकार किया गया है।[23] प्रणव एवं ईश्वर में वाच्य–वाचक संबंध है। ईश्वर प्रणव का वाच्य है और प्रणव ईश्वर का वाचक है।[24]

वृत्तिकार ने प्रणव के विषय में बतलाते हुए कहा है कि जिस के द्वारा परम नम्रता से स्तुति की जाये वह स्तुति अर्थक प्रणव शब्द है। इसी को ओंकार भी कहा गया है।[25] इस प्रकार ईश्वर की स्तुति करने वाले शब्द को प्रणव कहा गया है। प्रणव और ईश्वर के परस्पर वाच्य–वाचक भाव रूप संबंध को विशेषरूप से जानने वाले योगी को उस ओंकार का जाप और उसके वाच्य ईश्वर के स्वरूप का ध्यान करना चाहिए।[26] प्रणव का जप और उसके अर्थ ईश्वर के स्वरूप का ध्यान करने से योगी का चित्त एकाग्रता को प्राप्त हो जाता है।[27] वृत्तिकार भोजदेव ने कहा है कि समाधि की सिद्धि के लिए योगी को प्रणव का जप और उसके अर्थ ईश्वर के स्वरूप को ध्यान करना चाहिए।[28] वृत्तिकार का यह मत उचित ही प्रतीत होता है, क्योंकि प्रणव और ईश्वर का जप करने से चित्त एकग्रता को प्राप्त होता है। एकाग्र चित्त में ही समाधि की सिद्धि होती है। इस प्रकार साधक योगी ईश्वर प्रणिधान के द्वारा समाधि की सिद्धि एवं लाभ को प्राप्त कर सकता है।

उपसंहार :

उपर्युक्त कथन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि ईश्वर को सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, एक, ओंकार आदि रूपों में माना गया है। उसे चित्त एकाग्र करके अपने मन में पाया भी जा सकता है। उसकी प्राप्ती योगी एवं साधक को समाधि के माध्यम से हो सकती है। उसकी प्राप्ति होने पर मनुष्य के तीनों दुःख (आधिदैविक, आधिभौतिक एवं आध्यात्मिक) समाप्त हो जाते हैं।

सन्दर्भ सूची :

[1] क्लेशकर्मविपाकाशयैरपरामृष्टः पुरूषविशेष ईश्वरः। योग सूत्र 1/24

[2] क्लिश्नन्तीति क्लेशा। भोज वृत्ति पृष्ठ 63

[3] अविद्यास्मितारागद्वेषाभिनिवेशाः पंच क्लेशाः। यो0 सू0 2/3

[4] कुशलाकुशलानि कर्माणि। व्यास भाष्य पृ0 59

[5] विहितप्रतिषिद्धव्यामिश्ररूपाणि कर्माणि। भो0 वृ0 पृ0 63

[6] तत्फलं विपाकः व्या0 भा0 पृ0 59

[7] विपच्यन्ते इति विपाकाः कर्मफलानि जात्यायुर्भोगा। भो0 वृ0 पृ0 63

[8] तदनुगूणा वासना आशयाः। व्या0 भा0 पृ0 59

[9] आ फलविपाकाच्चितभूमौ शेरत इत्याशपा। भो0 वृ0 पृ0 63

[10] ईश्वरस्य च तत्संबंन्धो न भूतो न भावी। व्या0 भा0 पृ0 60

[11] पुरूषविशेषः– अन्येभ्यः पुरूषेभ्यो विशिष्यते इति विशेषः। भो0 वृ0 पृ0 63

[12] तस्य शास्त्रं निमित्तम– व्या0 भा0 पृ0 60

[13] प्रकृष्टसत्त्वनिमित्तम। एतयो शास्त्रोत्कर्षयोरीश्वरसत्त्वे वर्तमानयोरनादिः संबंध। व्या0 भा0 पृ0 60

[14] तस्य च तथाविधमैश्वर्य्यमनादेः सत्त्वोत्कषात्। तस्य सत्त्वोत्कर्षश्य प्रकृष्टाज्ज्ञानादेव। भो0 वृ0 पृ0 63

[15] स तु सदैव मुक्तः सदैवेश्वर इति। व्या0 भा0 पृ0 60

[16] द्वयोस्तुल्ययोरेकस्मिन्युगपत्कामितेऽर्थे नवमिदमस्तु पुराणमिदमस्वित्येकस्य सिद्धावितरस्य प्राकाम्यविधातादूनत्वं प्रसक्तम्। व्या0 भा0 पृ0 60

[17] न चेश्वराणामनेकत्वं, तेषां तुल्यत्वे भिन्नाभिप्रायत्वात्कार्यस्यैवानुपपतेः। भो0 वृ0 पृ0 63

[18] उत्कर्षपकर्षयुक्तत्वे य एवोत्कृष्टः स एवेश्वरः। भो0 वृ0 पृ0 63

[19] तत्रनिरतिशयं सर्वज्ञबीजम्। यो0 सू0 1/25

[20] एतद्विवर्धमानं यत्रनिरतिशयं स सर्वज्ञः इति सर्वज्ञबीजम्। व्या0 भा0 पृ0 66

[21] तस्मिन्भगवति सर्वज्ञत्वस्य यद्बीजमतीतानागतादिग्रहणस्याल्पत्वं महत्वं च मूलत्वाद्बीजमिव बीज तत्तत्र निरतिशयं काष्ठां प्राप्तम्। भो0 वृ0 पृ0 68

[22] स एषःपूर्वेषमपिगुरूः कालेनानवच्छेदात्। यो सू0 1/26

[23] तस्य वाचकः प्रणव। यो0 सू0 1/27

[24] वाच्य ईश्वरः प्रणवस्य। व्या0 भा0 पृ0 71

[25] प्रकर्षेण न्यूते स्तूयतेऽनेनेति नौति स्तौतीति वा प्रणव ओंकार। भो0 वृ0 पृ0 73

[26] तज्जपस्तदर्थभावनम्। यो0 सू0 1/28

[27] तदस्य योगिनः प्रणवं जयतः प्रणवार्थ च भावयतश्चित्तमेकाग्रं संपद्यले। व्या0 भा0 पृ0 74

[28] अतः समाधिसिद्धेये योगिना प्रणवो जप्यस्तदर्थ ईश्वरश्च भावनीय। भो0 वृ0 पृ0 74